युद्ध

इंसान एक बीज के समान है। उसे एक वृक्ष बनने के लिए विकसित होना चाहिए। यदि बीज बीज के रूप में ही मर जाता है, तो इसका अर्थ है कि वह विकसित नहीं हुआ। इसी तरह, यदि बीज विकसित नहीं होता, तो वह मृत्यु की ओर बढ़ रहा है। इसलिए, आपको या तो विकसित होना चाहिए या मर जाना चाहिए। इसके अलावा कोई अन्य विकल्प नहीं है।

एक बीज दो तरीकों से मर सकता है: यह बिना विकसित हुए मर सकता है, या यह विकसित होने के लिए मर सकता है, जिसका अर्थ है कि यह बीज के रूप में मर सकता है और पौधे के रूप में पुनर्जन्म ले सकता है। इसलिए, विकसित होने के लिए मरना लंबे समय तक जीने के लिए एक द्वार है। विकसित होने के लिए मरने का अर्थ है वर्तमान स्थिति से उच्च स्थिति में पुनर्जन्म लेने के लिए मरना, एक स्थिति से गायब होना और उच्च स्थिति में पुनः प्रकट होना।

एक व्यक्ति को प्रतिदिन पदार्थ के रूप में मरना चाहिए और आत्मा के रूप में पुनर्जन्म लेना चाहिए, या जैसा कि आंतरिक यात्रा अध्याय में बताया गया है, एक अधिपति को जन्म लेना चाहिए। अर्थात्, व्यक्ति को ज्ञात में मरना चाहिए और अज्ञात में पुनर्जन्म लेना चाहिए। यहाँ, ज्ञात पदार्थ है और अज्ञात रहस्यमय आत्मा है। यदि अज्ञात ज्ञान ज्ञात हो जाता है, तो वह भी पदार्थ बन जाता है।

यह, पदार्थ का अर्थ है रूप, यानी अहंकार। दूसरे शब्दों में, इस मायावी संसार में आपको अहं-कर्ता के रूप में या करने-वाला के रूप में या जीवात्मा के रूप में या अनेक भूमिकाएं निभाने वाले अभिनेता के रूप में मरना चाहिए और प्रतिदिन निराकार के रूप में या अधिपति के रूप में या साक्षी के रूप में या सूत्रधार के रूप में पुनर्जन्म लेना चाहिए।

ज्ञात में मरना और अज्ञात में पुनर्जन्म लेना एक निरंतर प्रक्रिया होनी चाहिए, केवल तभी विकास संभव है। इस बात को याद रखिए कि, यहां शरीर नहीं, बल्कि उस में निवास रहने वाला अहं-कर्ता मतलब आपको यानी जीवात्मा को ही मरना चाहिए।

यह ध्यान रखें कि - प्रत्येक वस्तु (त्रिगुण, व्यक्ति और इस मायावी जगत की शेष वस्तुएं) को साधन या वाहन के रूप में उपयोग करते हुए, अपने भीतर शाश्वत घर को खोजें; और फिर सांसारिक सभी चीज़ों को शुद्ध करना चाहिए और शाश्वत घर में प्रवेश करना चाहिए। यह आपकी दैनिक दिनचर्या होनी चाहिए।

अब यह प्रश्न उठता है, कि मरना और पुनर्जन्म लेना कैसे होगा? आप प्रतिदिन अनेक इच्छाएं चुनते हैं। उदाहरण के लिए, जब आप ध्यान करते हैं और कुछ अच्छा करने की इच्छा रखते हैं, तो आपकी ऊर्जा का 100% हिस्सा अच्छे की ओर नहीं जाता, बल्कि बुरे और तटस्थ की ओर भी जाता है। इसलिए हम यह चिंता करने लगते हैं कि हमारी इच्छाएं पूरी होंगी या नहीं।

जैसा कि धर्म के विषय में उल्लेख किया गया है, आपके भीतर गुणों का मिश्रण, उदाहरण के लिए, 60% अच्छा, 30% बुरा, और 10% तटस्थ है, तो विपरीत तदनुसार ऊर्जा को आकर्षित करते हैं। यह मिश्रण सभी के लिए समान नहीं होगा, और यह बताना मुश्किल है कि प्रत्येक व्यक्ति में कितना अनुपात में है, और यह परिस्थितियों के अनुसार भी बदलता है। फिर साधना या अभ्यास करके इस मिश्रण को बराबर अनुपात में बनाने का प्रयास करें। जब यह मिश्रण आपके भीतर संतुलित हो जाता है, तो आप परम आनंद का अनुभव करेंगे।

जब भी आप कोई इच्छा चुनते हैं, तो तीन विपरीत भूमिकाएं अनिवार्य रूप से बन जाती हैं। अर्थात, यदि आप एक अच्छे गुरु की इच्छा करते हैं, तो आप अनजाने में एक बुरे और तटस्थ गुरु की भी इच्छा कर रहे हैं, और तदनुसार, आप अच्छे, बुरे, और तटस्थ शिष्य भूमिकाओं की भी इच्छा कर रहे हैं। इसलिए, एक गुरु शिष्य को तीन प्रकार प्रतीत होता है, और एक शिष्य गुरु को तीन प्रकार प्रतीत होता है।

तो, समझें कि यह सब आपकी इच्छा के अनुसार हो रहा है, और सोचें, 'मैंने इसे बनाया, मैंने इसे इतने दिनों तक पाला, तो अब इसे भंग करना मेरी जिम्मेदारी है।' इसलिए, उस इच्छा से संबंधित तीनों - गुरु और शिष्य भूमिकाओं - को भंग करें, अर्थात, उन्हें शुद्ध करें।

विरोधी शक्तियों को या तो उनके बीच युद्ध छेड़कर या उनके बीच मित्रता करके भंग किया जा सकता है। इसलिए, आपको जो करना है, वह यह है कि इच्छा से संबंधित लक्षणों को दिव्य रूप से अनुभव करते हुए, उन गुणों की सहायता से अधिपति के रूप में पुनर्जन्म लेने के लिए मरने का निर्णय लें। फिर, विरोधी शक्तियों के बीच मित्रता करें और उन्हें एकजुट करें, इस पर अधिक जानकारी के लिए 'आंतरिक यात्रा' विषय पढ़ें।

लेकिन कुछ भूमिकाएं मित्रता के साथ सहयोग नहीं करती हैं क्योंकि वे तब बनाई गई थीं जब अच्छे, बुरे, और तटस्थ के बीच शत्रुता थी। वे उसी तरह से प्रोग्राम किए गए हैं, इसलिए वे केवल लड़ना जानते हैं। अर्थात्, आपने विपरीतों को शत्रु के रूप में सोचते हुए उन भूमिकाओं के साथ संबंध बनाए रखा, न्यूएनर्जी कांसेप्ट का अनुसरण करने से पहले, इसलिए वे विलीन नहीं होना चाहते हैं।

वे आपके ध्यान को भी बाधित करेंगे, और भले ही आप उनसे कहें कि 'मैं समर्पण करूंगा, मुझे शुद्ध करने में मदद करो,' वे युद्ध के अलावा कुछ भी मानने को तैयार नहीं होंगे। अगर वे आपको प्रभावित करते हैं, तो इसका मतलब है कि उनका प्रभाव आपके ऊपर है, और आपके भीतर भी दोष है, और आप भी इस भूमिका में फंसे हुए हैं, और आप शुद्ध नहीं हैं।

तो, 'पिघलजाओ' साधना करके शुद्ध होने के बाद, अपने भीतर उस भूमिका के साथ और आपके भीतर की अन्य भूमिकाओं के साथ युद्ध छेड़ दें और सभी विपरीतों को नष्ट कर दें। इसे करने से, नष्ट हुई शक्तियां शुद्ध शक्तियों में परिवर्तित हो जाएंगी और आपकी आगामी इच्छाओं के लिए उपयोगी होंगी।

आपको यहाँ एक संदेह हो सकता है कि ऊर्जा को न तो बनाया जा सकता है और न ही नष्ट किया जा सकता है, ठीक है? मेरा इसका जवाब यह है कि हम ऊर्जा को पूरी तरह से नष्ट नहीं कर रहे हैं, बल्कि हम प्रेम के स्थान पर कठोरता से व्यवहार करके पदार्थ को शुद्ध में परिवर्तित कर रहे हैं। एक और संदेह आपको हो सकता है कि, आपका कांसेप्ट न्यूएनर्जी है ना, तो यहां हम नई शक्ति को कैसे पैदा कर सकते हैं? मेरा इसका जवाब यह है कि भगवान के पास अनंत शुद्ध शक्ति है, और इसे ही मैं न्यू एनर्जी कहता हूँ। यह शक्ति आपके लिए केवल तभी उपलब्ध होगी जब आप शुद्ध होंगे।

साधना

उदाहरण के लिए, पति अपने भाई की बात को अपनी पत्नी की बात से ज्यादा महत्व देता है। तब, पत्नी की आध्यात्मिक साधना यह होनी चाहिए - 'तुम मेरे बातों को नहीं सुन रहे हो, लेकिन अपने भाई के बातों को सुन रहे हो, इसका मतलब है कि मेरे बातों का तुम पर कोई प्रभाव नहीं है, इसलिए तुम उसे सुन रहे हो।' इसलिए, मैं मानती हूँ कि मुझे पत्नी की भूमिका से बाहर आना होगा और तटस्थ होना होगा और मैं आपको वैसे ही स्वीकार करती हूँ जैसे तुम हो और मैं आपको बदलने की कोशिश नहीं करूँगी। और तुम भी पत्नी की भूमिका को स्वीकार करो। भूमिकाओं के बीच मित्रता बनाने की कोशिश करो या उनके सहयोग से शुद्ध बनने की कोशिश करो।

मान लीजिए कि अगर वे भूमिकाएं सहयोग नहीं करती हैं - तो अकेले बैठें, ऐसा करें: पत्नी भूमिका का समर्थन करें, फिर पति और तटस्थ भूमिकाओं के साथ लड़ें, पति भूमिका का समर्थन करें, फिर पत्नी और तटस्थ भूमिकाओं के साथ लड़ें, तटस्थ भूमिका का समर्थन करें, फिर पति और पत्नी भूमिकाओं के साथ लड़ें। एक तरफ बैठकर दूसरों को नष्ट करके, अंततः

शुद्ध जीवात्मा बनें और अच्छे, बुरे, और तटस्थ विपरीतों को एक साथ नष्ट कर दें। चूंकि वे शुद्ध ऊर्जा से एक साथ पैदा होते हैं, इसलिए वे एक साथ बढ़ते हैं, और फिर वे शुद्ध ऊर्जा में एक साथ मर जाते हैं या विलीन हो जाते हैं।

इसका मतलब है कि केवल एक यहाँ नहीं रह सकता है, और तीन विपरीत हमेशा अस्तित्व में रहते हैं। ध्यान या नींद के माध्यम से, ऊर्जा हमेशा तीनों के लिए उपलब्ध रहती है। इसलिए यदि एक भी विपरीत कमजोर हो जाए, तो वह पुनः ऊर्जा को आकर्षित करता है और लड़ाई जारी रहती है। इसी तरह, यह गारंटी नहीं है कि ऊर्जा हमेशा आपकी पसंद की तरफ अधिक होगी, इसलिए जीत और हार दोनों होंगे। अगर आप हमेशा एक तरफ से दूसरे के खिलाफ लड़कर हमेशा जीतते हैं, तो भी आप कभी भी भगवान तक नहीं पहुंचेंगे, बल्कि माया में उलझे रहेंगे। इसलिए, समाधान यह है कि युद्ध या मित्रता के माध्यम से सभी विपरीतों को नष्ट कर दें।

इन बातों को ध्यान में रखकर भीतर संघर्ष करें - सृष्टि आपके भीतर हो रही है, और आपने पिछले जन्मों में सभी प्रकार की भूमिकाएं निभाई हैं और सभी प्रकार के अनुभव किए हैं। यह जीवन उन सभी को शुद्धता में परिवर्तित करने और मोक्ष प्राप्त करने के लिए लिया गया है। ध्यान रखें कि युद्ध आपके पिछले जन्मों की भूमिकाओं के साथ अंदर लड़ें। इसका मतलब है कि आप खुद से लड़ रहे हैं। अगर आप लड़ने में असमर्थ महसूस करते हैं, तो आत्म स्थिति में पुनर्जन्म लेने के लिए पिघलजाओ अध्याय के अनुसार पिघलने की साधना कीजिए।

आत्मा में कुछ समय बिताने के बाद, शरीर में वापस आएं। फिर, एक नया व्यक्ति शरीर में प्रवेश करता है क्योंकि आपने मृत्यु को जान लिया है। आपको आत्मा का आयाम मिल गया जो शरीर से परे है। इसलिए, हर अनुभव के बाद भगवान के राज्य में प्रवेश करें, तभी आप दोनों आयामों की यात्रा करने में निपुण होंगे। आपको विश्वास होगा कि भगवान का राज्य हमेशा सुलभ है। चूंकि भगवान के पास सभी सांसारिक समस्याओं के समाधान हैं, भगवान से पूछें, और उनके मार्गदर्शन का पालन करके, आप अपनी समस्याओं को हल करेंगे और खुशी से जीवन जिएंगे।

इस प्रकार प्रतिदिन युद्ध द्वारा या मित्रता द्वारा सब कुछ शुद्ध कर लें, फिर ध्यान करें और आंखें खोलने से पहले इस प्रकार कामना करें - विरुद्ध पात्रों के साथ स्नेहपूर्वक रहूँगा या हर परिस्थिति में और हर किसी के साथ शुद्ध रूप से रहूँगा; या सूत्रधारी के रूप में रहकर मैं सभी प्रकार की भूमिकाएँ निभाता हूँ; या जैसा आप चाहें वैसा इरादा करें। कुछ समय के बाद, अपनी आँखें खोलें। इस तरह आपके सृजनात्मकता का उपयोग करके, एक ही शरीर में बार-बार

मरकर और पुनर्जन्म लेकर अपने सभी पिछले अनुभवों को शुद्ध अनुभवों में बदल दें। केवल तभी भूतकाल वर्तमान को प्रभावित नहीं करेगा। तभी आप कर्म सिद्धांत से परे हो जाएंगे।

** यह ज्ञान तेलुगु भाषा से अनुवादित है। तेलुगु या अन्य भाषाओं में यह ज्ञान पढ़ने के लिए इस लिंक पर क्लिक करें **http://darmam.com/library.html**